© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 07 | October-December 2015

हिन्दी : स्थिति एवं गत्रि

डॉ. नीलम सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द।

हिन्दी शब्द का प्रयोग हम सामान्य एवं संवैधानिक अर्थ में क्रमशः राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में करते हैं वह शब्द भाषा के अर्थ में अपेक्षाकृत नया है। यद्यपि हिन्दी शब्द काफी पुराना है और हिन्द से बना है।

प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से 'हिन्दी' शब्द भाषा या खड़ी बोली का शब्द न होकर फारसी का है। डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा के मतानुसार संस्कृत की 'स' ध्वनि का उच्चारण फारसी में 'ह' हो जाता है। इसी आधार पर कुछ विद्वान 'हिन्दी' शब्द को 'सिन्धी' का रूपान्तर मानते हैं। हिन्द की भाषा के अर्थ में 'हिन्दवी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुहम्मद आओफी ने 13वीं शती में किया। 13–14वीं शती में अमीर खुसरो ने भी अपने ग्रन्थ 'खालिक वारी' में इसी शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है व हिन्दुस्तानी शब्द मूलतः विशेषण है। सन् 1715 में डच पादरी जे॰ केटलीर द्वारा लिखित हिन्दी व्याकरण तथा सन् 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज के जॉन गिलक्राइस्ट ने इस शब्द का प्रयोग किया।

प्रयोग क्षेत्र में सामान्य अर्थ में हिन्दी वह है जो सम्पूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्रों की परिनिष्ठित भाषा है। जिसकी बोली खड़ी है।

भाषा शास्त्रीय दृष्टिकोण में हिन्दी का अर्थ देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली संस्कृत बहुल खड़ी बोली है।

संवैधानिक दृष्टि से आज़ादी के बाद 26 जनवरी 1950 से देश में संघ की सरकारी भाषा है अर्थात् प्रशासन तंत्र को चलायमान गतिशील करने वाली भाषा। जिसे पत्र व्यवहार, राजकाज और सरकारी लिखा–पढ़ी के काम में लाया जाता है।

राष्ट्रभाषा को राजभाषा बनाया गया ताकि सामाजिक संस्कृति का विकास हो सके जो कि राष्ट्र की आत्मा की वाणी है। भारत बहुभाषा–भाषी राष्ट्र है फिर भी हिन्दी की वर्तमान स्थिति व गति के क्षेत्र में अनेक बिंदुओं को देखा जा सकता है।

21वीं सदी जो सूचनाओं के विस्फोट का पर्याय है। पूरी दुनिया एक ग्राम की तरह बन वैश्विक संस्कृति में विकास पाने लगी है। पूरा विश्व मुट्ठी में आकर सिमट गया है। पिछली सदी के अंतिम दशकों में एक नया शब्द हिन्दी में प्रवेश कर गया है जो है – 'ग्लोबलाइजेशन' जो कि अंग्रेजी का शब्द है व हिन्दी में यह भूमण्डलीकरण एवं वैश्वीकरण के नाम से जाना जाता है। भूमंडलीकरण ने हमारे सामने कई मोहक शब्द उछाले है, उनमें एक

है – विश्व गांव, वसुधैव कुटुंबकम् जिसने हमारी भाषाओं पर दूरगामी प्रभाव डाला है। जिसमें जनसंचार माध्यम भाषा को अर्थशास्त्र से जोड़ने के परिणामस्वरूप हर 22 मिनट में हिन्दी में एक नए बिगड़े हुए शब्द को प्रसारण माध्यमों द्वारा संप्रेषित किया जाता है। इस कारण हिन्दी नये रूप, रंग में आ रही है। विज्ञापन, समाचार, ई–मेल जैसे क्षेत्रों में उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए ऐसे विज्ञापन प्रयुक्त हो रहे हैं जैसे – – नो चिपचिप, नो झंझट, खाओ ब्रिटानिया फिफ्टी–फिफ्टी, अब बच्चे हैप्पी आदि। हिन्दी की देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता में इसके विकास विस्तार के लिए प्रौद्योगिकी का योगदान मिलता है। हिन्दी की सम्प्रेषणीयता क्षमता विलक्षण, चुस्त और मनोहारी है। जिससे भाषा–व्यवहारों में नयापन आ रहा है। संचार भाषा में भी वक्ता की भाषाई क्षमता तथा भाषा व्यवहार का महत्व बढ़ रहा है।

वैश्विकरण के प्रभाव के फलस्वरूप आज हिन्दी रोजगार परक संचार भाषा बनी है। उसकी शब्द संपदा युगानुकूल बनी है। टेलीफोन, टेलीप्रिंटर, टेलेक्स, ई–मेल जैसे माध्यमों की भाषा बन पाई है। हिन्दी में सॉफ्टवेयर्स का निर्माण हो रहा है जो ग्राहकों को सेवा देने के लिए तत्पर है। 19वीं शती में खड़ी बोली के विकास की प्रथम सीढ़ी से 21वीं शती तक के विकास की ओर अग्रसर हिन्दी की सामग्री में अनुपात, गति, एकता, वैषम्य सन्तुलन का समावेश हुआ है।

हिन्दी की आज की स्थिति में उसकी वैज्ञानिकता को देखते हुए इसके विकास–विस्तार के लिए प्रौद्योगिकी का भी योगदान मिला है। ऑनलाईन संसाधनों के क्षेत्र में लीववए मगबपजमए मूइए ीवज इवजए हववहसम आदि सर्च इंजन अनेक कार्यों के लिए सुविधाएँ प्रदान करती है। मेटासर्च इंजिन के कारण समय व श्रम दोनों की बचत होती है। इंटरनेट, एक्सप्लोरर, नेट स्केप, नेट मैनेज, वेब सफर, आदि प्रमुख खोजक साफ्टवेयर है। इसकी मदद से ग्राफिक्स, दृश्य, लिखित सूचनाएँ प्राप्त करने के साथ ही हिन्दी के पृष्ठ इंटरनेट पर खोले जा सकते हैं। सुलिपि, आकृति सिद्धार्थ, शब्दरत्न लिपि, शब्दमाला, कुण्डली बिंकी, एल्प पर्सनल, लीला हिन्दी, गुरू भाषा, शब्द सम्राट आदि साफ्टवेयर बाजार में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में संगठन में काम करने के लिए उपलब्ध है।

आज हिन्दी में पत्रकारिता में भी क्रांति आई है। हमें प्रसन्नता होनी चाहिए कि पत्रकारिता में अंतर्राज्यीय संस्करणों का नया और उल्लेखनीय दौर प्रारंभ हो गया है। जिसमें संस्करण की दृष्टि से हिन्दी का क्षेत्रफल विशाल है। हालांकि ये स्तर अंग्रेज़ी की तुलना में कम है, परन्तु विकास की इस अग्रसरता में इसके लिए समाचार पोर्टल उपलब्ध हुआ है। जो पूरी दुनिया की खबर पल में देने हेतु तत्पर है। भारत में तहलका डॉटकॉम ने पत्रकारिता को बेहद गंभीरता से पेश किया है। जी न्यूज, आजतक, एन॰डी॰टी॰वी॰, स्टार न्यूज का प्रसारण अत्यधिक लोकप्रिय है। नई दुनिया, वेब दुनिया, जागरण डॉटकॉम, इंडिया टाइम्स डॉट कॉम,

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 07 | October-December 2015

आदि बहुआयामी पोर्टल संगणक में उपलब्ध है। विदेशों में बसे भारतीय इन संस्करणों को वेब पर देख, पढ़ सकते हैं। अपने शहर की खबरें जान सकते हैं।

हिन्दी मौखिक मुद्रित भाषा के साथ माइक्रोफोन की भाषा, कैमरा और कलम की भाषा बनी है। जिसमें पटकथा, संवाद, नाटक, धारावाहिक, लेखन ने भावमुद्रा, अभिनय, लय, आदि उसके मौखिक एवं अभिनयात्मक पक्ष है। हिन्दी की रचनाधार्मिता में साहित्य, कला व जीवन की त्रिवेणी समायी है।

जबकि आजादी के बाद की हमारी विडम्बना को अज्ञेय जी ने बताया है –

''जब हम राजनीति दृष्टि से पराधीन थे तब हमारे पास स्वाधीन भाषा थी। जब हम स्वाधीन हो गये हमारी भाषाएं पराधीन हो गयी।''

परन्तु आज 19वीं शती से संघर्ष करती हुई 21वीं शती तक पहुंची हमारी हिन्दी के लिए प्रसन्नता की बात है कि इसकी प्रगति उत्साहवर्धक रही है। हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर बहुत उच्चकोटि का साहित्य प्रकाशित हो रहा है। 1998 में सर्वप्रथम शिक्षामंत्री ने कम्प्यूटर टैक्नॉलोजी, बायोटेक्नोलॉजी की शब्दावली की ओर ध्यान दिया। 24 सितम्बर 1998 को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने न्छc (संयुक्त राष्ट्र संघ) को हिन्दी में सम्बोधित किया। यही कारण है कि 21वीं सदी की हिन्दी केवल साहित्यिक भाषा न होकर तकनीक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय, बाजार की भाषा है। उदारीकरण एवं वैश्विकरण के साथ हिन्दी का भाव बढ़ रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत जैसे बड़े बाजार में पहुंचने के लिए हिन्दी भाषा को सम्पर्क भाषा के रूप में माध्यम बनाया गया है। प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और विज्ञापन की दुनिया के साथ ही हिन्दी विज्ञान, प्रविधि, उद्योग की भाषा की भूमिका निभाने हेतु तैयार है। हिन्दी ने आज मल्टी मीडिया, विडियो की पूरी श्रृंखला विकसित की है। ϖϖज कानुपर के सहयोग से हैदराबाद विश्वविद्यालय में 'अनुसारक' नामक स्वयं चलित मशीनी अनुवाद प्रणाली के सहयोग से भारतीय भाषाओं में परस्पर शाब्दिक अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है। द्विभाषिक इलैक्ट्रॉनिक टेलेक्स पर हिन्दी संदेश भेजने के लिए दूरसंचार विभाग ने भी प्रशिक्षण की व्यवस्था की है। बैंक, वित्तीय संस्था, सरकारी कार्यालयों में लगाये गये अधिकांश संगणकों में हिन्दी संचार भाषा की भूमिका निभा रही है। संचार भाषा के रूप में हिन्दी का विज्ञापनों में प्रयुक्त होना उसकी अभिसारी शैली को व्यक्त करता है।

भूमण्डलीकरण में हिन्दी तो यहां की आत्मा है। भारत के विशाल–विस्तृत भू प्रदेश में जहां 24 प्रमुख भाषाएँ और 2800 उप–भाषाएं है जिसमें हिन्दी की स्थिति उत्तरोतर प्रगतिशील है। जो हमारी एकता व अस्मिता की पहचान है। जिसने समस्त भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया है। यही कारण है कि विदेशों में भी हिन्दी का प्रभाव है। अभी हाल में ही अमेरिका के राष्ट्रपति 'डोनाल्ड ट्रैम्प ने भारत की संस्कृति व हिन्दी भाषा की प्रशंसा में स्वयं को उससे प्रभावित बताया है। हिन्दी सिनेमा की मांग विदेशों में ज्यादा है।

विश्व के 132 देशों में यह बोली जाती है। नेपात में 53 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिन्दी है। श्रीलंका, पाकिस्तान, चीन, नेपाल, तिब्बत, मारिशस, फीजी, सूरीनाम जैसे देशों में हिन्दी भाषा बोलने वालों की संख्या अधिक है। विश्व के 148 विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षा का माध्यम बनी है। पूरे विश्व को प्रभावित करने वाली अंग्रेज़ी से भी ज्यादा संख्या हिन्दी बोलने वालों की है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार केवल भारत में 35 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिन्दी भाषा बोलते है, तो पूरे विश्व में अंग्रेज़ी बोलने वालों की संख्या तैंतीस करोड़ सत्तर लाख है। सन् 2001 के सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में सबसे ज्यादा भाषा बोलने वालों की संख्या में हिन्दी प्रथम क्रमांक पर है। हिन्दी का प्रचार–प्रसार भारत एवं विदेशों में दिन–व–दिन बढ़ रहा है।

हिन्दी की प्रकृति सर्वसमावेशक की है। जो किसी भी भाषा को बड़ी सहजता से अपना लेती है। देश–विदेशी की भाषाओं में घुल–मिल जाती है। इसीलिए भारत में आज पंजाबी, हिन्दी, बंगाली–हिन्दी, गुजराती–हिन्दी, विशिष्ट शहरों के अनुसार हैदराबादी–हिन्दी, मुम्बइया–हिन्दी, कलकतिया हिन्दी, मद्रासी–हिन्दी ऐसे विविध रूप बने है। विभिन्न प्रकार के उत्पादनों की बिक्री हेतु आज कई विदेशी कम्पनियाँ यहाँ आ रही है और यहाँ आकर यहाँ की जनता से सम्पर्क स्थापित करने के लिए हिन्दी को अपना रही है। हिन्दी में प्रकाशित एवं प्रसारित होने वाले विज्ञापनों के कारण हिन्दी अधिक लोकप्रिय हो रही है। उसका माधुर्य अधिक कर्णप्रिय लगता है। टी॰वी॰, सिनेमा, रेडियो के कारण हिन्दी रोजगार की भाषा बन गयी है। अनुवाद, रूपान्तरण, दुभाषीय, स्क्रिप्ट लेखन, विज्ञापन, संवाद, सम्भाषण, दृष्टिभाषा के रूप में हिन्दी के नये–नये रूप विकसित होने लगे है।

भूमण्डलीकरण के चलते आज जहाँ विश्व की भाषाओं के विषय में यह कहा जाता है कि आने वाले समय में केवल 14 भाषाएँ ही जीवित रहेंगी, परन्तु जहाँ तक हमारी भारतीय जनता जो ज्यादातर देहातों में बसती है, उनकी संस्कृति, रहन–सहन, भाषा जिसकी वह रक्षा करते आये है। उनसे हमारी संस्कृति एवं भाषाओं को कोई खतरा न होकर अपितु इन्हें सुरक्षित रखा है और अपना अभिमान एवं अस्मिता बरकरार रखी है। नवजागरण युग में जहाँ राष्ट्रीयता का अभियान चला और जिसमें भारतीय अस्मिता के प्रति जागरण का कार्य हो रहा है। इसमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन सबसे आगे है।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण जहाँ हमारे जीवन–मूल्य ह्रास होने का भय है। हम अनेक अर्जियां अंग्रेज़ी में भरते है। पर प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या अंग्रेजी में ही पढ़ा–लिखा व्यक्ति विद्वान है शायद नहीं। प्रेमचन्द जी ने कहा था – ''कोई राष्ट्र केवल इसलिए राष्ट्र नहीं होता कि वह एक राज्य के अन्तर्गत है, बल्कि इसलिए भी उसमें सांस्कृतिक एकता और दृढ़ता है। लिपि, भाषा, साहित्य, संस्कृति के मुख्य अंग में समानता है और इसी प्रकार की समानता आज भारतीय भाषाओं में है।

मानवीय सम्बन्धों का आधार व भाषाओं का महत्व मानवीय जीवन में अन्योन्य है। यही कारण है मनुष्य–मनुष्य के बीच मानवीयता, आपसी सम्बन्ध स्थापित करने की दृष्टि से भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी भाषा आज सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण कर रही है। हमारी संस्कृति का बोध देने वाली सरल, सुबोध, कोमल, मधुर एवं वैज्ञानिक भाषा हिन्दी ही है।

परन्तु आवश्यकता है केवल बदलते सन्दर्भ के अनुसार बदलाव की नवीन विचार, चर्चा, अपने मत की भूमिकाओं की। जिसमें खोजों और ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है। हमारी भाषा को नवीन दृष्टिकोण से विकसित करने की चुनौती हमारे सामने है। आवश्यकता है सकारात्मक दृष्टिकोण की जिसमें हिन्दी दिशादर्शन बन सकेगी। वह दिनों दिन अंग्रेजी के समानान्तर अपना रूपान्तरण कर रही है। वैज्ञानिक, तकनीकी के क्षेत्र में हिन्दी का प्रथम स्थान प्राप्त करना उसका प्रतीक है। साथ ही 'जिस्ट' जैसी तकनीक का विकास व ऐब्प मानक कोड प्रणाली स्वयं में अनूठी मिसाल है। ठैछस्ए श्रप्व त्मसपंदबमए ज्जं क्वबवउव जैसी कम्पनियां घर बैठे अपनी सेवाएं हिन्दी में उपलब्ध करा रही है। व्यापार क्रांति के कारण हिन्दी हमारे सामने नये रूप रंग में आ रही है। बीमा कंपनी, बैंक, वित्त निगम, मनोरंजन, उद्योग, उपभोक्ता, वस्तु आदि के लिए हिन्दी युक्त बाजार भारत में फलने–फूलने लगा है। इक्कीसवीं सदी का ज्ञान–विज्ञान, तकनीक आदि नित्त नया ज्ञान सीखने का माध्यम हिन्दी बनी है। आज जन माध्यमों के रूप में संचारित हिन्दी सेवा देने का कार्य कर रही है। उसकी गति को देखते हुए दो पहलू हमारे समक्ष है पहला सृजन दूसरा उपलब्धि।

उसकी सृजन प्रक्रिया मे नित नवीनता के साथ उपयोगिता का समन्वय होने के कारण ही वह अधिक लोकप्रिय है। वही उसकी गति है और वही उपलब्धि भी।

जिसको देखते हुए आज के ग्लोबलायजेशन के दौर में हिन्दी जीवन्त भाषा है और सदैव रहेगी। 1998 में आलोचक, नामवर सिंह ने हिन्दी के भूमण्डलीकरण की ओर देखते हुए कहा था –

"हिन्दी बेहतर सम्प्रेषणीय समतावाली भाषा है। आज इसी बाजार की हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। उसके विकास के लिए उसके वर्ण संकर होना जरूरी है। इसमें हिन्दी पर कोई संकट नहीं है। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी श्रेष्ठ, श्रेयस्कर, सर्वमान्य भाषा है।"

अतः हिन्दी वह भाषा है जिसके प्रति हमारे हृदय में श्रद्धा होनी चाहिए न कि भय जो सदैव भारतीय भाषाओं में एकरूपता लाने का प्रयास करती है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति श्री उपेन्द्र बख्शी जी ने कहा है – 'भाषा का विकास संघर्ष से नहीं विचार और सत्कार से होता है।"

अतः हिन्दी का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है। आज जरूरी है कि हमारा झुकाव अंग्रेज़ी की तरफ न होकर हिन्दी की ओर हो। हमें हिन्दी का साहित्य, चिन्तन, जीवन मूल्य,

नैतिकता, जतन हेतु परस्पर आदान–प्रदान हेतु अनुवाद को बढ़ावा देना चाहिए। हमारी राष्ट्रीयता व संस्कृति की परिचायक हिन्दी हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की संवाहिका है। उसके प्रति अभिमान, गर्व, अस्मिता ही हमारी प्रतिबद्धता है। यही उसकी विशेषता भी है व रचनात्मक गति भी। तभी डॉ॰ शैलजा पाटील ने हिन्दी को स्थान व गति की दिशा भी कहा :–

भारत के सौ करोड़ चेहरों में
हिन्दी हृदय मात्र एक है।
चौबीस भाषाओं में
हिन्दी की प्रज्ञा मात्र एक है।
बन बड़ी बहन
संचार की क्रिया मात्र एक है।
चिंता मुक्त स्थिति में
अंतरात्मा का प्रकाश मात्र एक है।
बनकर एकता की कड़ी
हिन्दी की भूमिका मात्र एक है।
वैश्विकरण के क्षेत्र में
हिन्दी का स्थान विज्ञान की भांति है।
तत्वों के आधार पर विकसित
बढ़ती निरन्तर चल रही
हमें गर्व है हिन्दी पर
चलो आओ कहें
जय हिन्दी, जय राष्ट्र भारती।

सन्दर्भ सूची

1. वैश्विकता के संदर्भ में हिन्दी : डॉ॰ शैलजा पाटील, शुभम् पब्लिकेशन, 3ए/128, हंसपुरम, कानपुर – 208021
2. प्रयोजन मूलक (विविध संदर्भ) सम्पादक : बलजिंदर कौर रन्धावा कौशल पाण्डेय, अतुल प्रकाशन, 57–पी, कुंज विहार – ¤ (यशोदानगर) कानपुर – 208011
3. प्रयोजन मूलक हिन्दी : डॉ॰ मुकेश अग्रवाल,

		के.एल. पचौरी प्रकाशन, 8/डी – ब्लाक एक्सटेंशन इन्द्रापुरी कलोनी, गाजियाबाद – 201102
4.	प्रयोजन मूलक हिन्दी प्रक्रिया और स्वरूप	: कैलाश चन्द्र भाटिया, टी॰ एस॰ बिष्ट, तक्षशिला प्रकाशन, 98–ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
5.	प्रयोजन मूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग	: दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 110002
6.	प्रयोजन मूलक हिन्दी के विविध रूप	: डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन, 98–ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
7.	हिन्दी विविध आयाम	: डॉ॰ विजय राघव रेड्डी, डॉ॰ शकुन्तला रेड्डी, अकादमिक प्रतिभा 42, एकता अपार्टमेंट, गीता कालोनी, दिल्ली – 110031